सामाजिक परिवर्तन

Miss Chhaya
Assistant professor
Department of sociology
j.k.p.(pg) college muzaffarnagar

प्रस्तावना

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत अटल एवं अवश्यम्भावी नियम है। जो नियम आज है वह भावी कल से भिन्न होगा। संसार में कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं है जो स्थिर रहता है उसमें कुछ ना कुछ परिवर्तन सदैव होता रहता है। वास्तव में स्थिर समाज की कल्पना करना संभव नहीं है। समाज में सामंजस्य स्थापित करने के लिए भी परिवर्तन आवश्यक है इसलिए **मैकाइवर तथा पेज** ने कहा है कि"समाज परिवर्तनशील एवं गत्यात्मक दोनों है।"

प्रत्येक प्रकार के परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन नहीं कहा जा सकता सामाजिक परिवर्तन मनुष्य एवं समूह अथवा एक समूह से दूसरे समूह के पारस्परिक संबंधों में होने वाला परिवर्तन है।

परिवर्तन का संबंध तीन बातों से है।

1. वस्तु
2. समय
3. भिन्नता

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषाएं

परिवर्तन प्रकृति का एक नियम है संसार के इतिहास को उठाकर देखा जाए तो ज्ञात होता है कि जब से समाज का प्रादुभाव हुआ हैं,सबसे समाज के रीति रिवाज, परंपराएं, रहन-सहन की विधियां,पारिवारिक और वैवाहिक व्यवस्थाओं आदि में निरन्तर परिवर्तन होता है इस परिवर्तन के फल स्वरुप ही वैदिक काल के समाज में और वर्तमान समाज में आकाश पाताल का अंतर पाया जाता है। परंतु यह बात ध्यान में रखने की है कि प्रत्येक परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन नहीं होता वरन् केवल सामाजिक संबंधों सामाजिक संस्थाओं तथा संस्थाओं के परस्पर संबंधों में होने वाला परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन की श्रेणी में आता है। सामाजिक परिवर्तन का संबंध उन सभी पहलुओं से है जिन्हें हम **सामाजिक** शब्द के अंतर्गत रख सकते हैं। प्रमुख विद्वानों ने इसे निम्न प्रकार से परिभाषित किया है –

जॉनसन के अनुसार-” सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य सामाजिक संरचना में परिवर्तन से है।”

किंग्सले डेविस के अनुसार-” सामाजिक परिवर्तन में केवल वे ही परिवर्तन समझे जाते हैं जो सामाजिक संगठन अर्थात समाज के ढांचे और कार्यों में घटित होते हैं।”

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार-” समाजशास्त्री होने के नाते हमारी प्रत्यक्ष रूचि सामाजिक संबंधों में है हम केवल उस परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन मानेंगे जो इनमें अर्थात सामाजिक संबंधों में होते हैं।”

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएं

1. सामाजिक परिवर्तन अवश्यम्भावी एवं स्वाभाविक है
2. सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक घटना है
3. सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति सामाजिक होती है
4. सामाजिक परिवर्तन अमूर्त होता है
5. प्रत्येक समाज में परिवर्तन की गति एक जैसी नहीं होती है
6. सामाजिक परिवर्तन में समय का तत्व छिपा होता है
7. सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न प्रतिमान होते हैं
8. सामाजिक परिवर्तन के बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है
9. सामाजिक परिवर्तन तुलनात्मक तथा सापेक्ष होता है
10. सामाजिक परिवर्तन सामुदायिक परिवर्तन होता है
11. सामाजिक परिवर्तन के बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है

सामाजिक परिवर्तन के मुख्य स्रोत

1. अविष्कार
2. खोज
3. प्रसार
4. आंतरिक विभेदीकरण

सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान या प्रकार

1. **रेखीय परिवर्तन-** यह परिवर्तन कभी-कभी क्रमबद्ध तरीके से एक ही दिशा में निरंतर चलता रहता है भले ही परिवर्तन का आरंभ एकाएक ही क्यों न हो उदाहरण के लिए हम विभिन्न अविष्कारों के पश्चात परिवर्तन के कर्मों की चर्चा कर सकते हैं ऐसे परिवर्तन को हम **रेखीय परिवर्तन** कहते हैं अधिकांश उद्विकासीय समाजशास्त्री एक रेखीय सामाजिक परिवर्तन में विश्वास करते हैं।
2. **उतार-चढ़ाव का परिवर्तन-** सामाजिक परिवर्तनों में परिवर्तन की प्रकृति ऊपर से नीचे तथा नीचे से ऊपर जाने की होती है। इसलिए इसे उतार चढ़ाव का परिवर्तन के नाम से भी हम जानते हैं उदाहरण के लिए भारतीय सांस्कृतिक परिवर्तन की चर्चा कर सकते हैं पहले भारत के लोग अध्यात्मिक वाद की ओर बढ़ रहे थे जबकि आज वे उसके विपरीत भौतिकवाद की ओर बढ़ रहे हैं इस प्रतिमान के अंतर्गत यह निश्चित नहीं होता कि परिवर्तन कब और किस दिशा में उन्मूख होगा।
3. **शुक्रिया परिवर्तन-**इस परिवर्तन को **तरंगीय परिवर्तन** के नाम से जाना जाता है इस परिवर्तन के अंतर्गत उतार-चढ़ाव दौर परिवर्तन में परिवर्तन की दिशा एक सीमा के बाद विपरीत दिशा में उन्मुख हो जाती है इसमें लहरों की भांति एक के बाद दूसरा परिवर्तन आता है ऐसा कहना मुश्किल होता है कि दूसरी लहर पहली लहर के विपरीत है हम यह भी कहने की स्थिति में नहीं है कि दूसरा परिवर्तन पहले की तुलना में उन्नति और नीति का सूचक है इस प्रतिरूप का सटीक उदाहरण फैशन है हर समाज में नए नए फैशन की लहरें आती रहती हैं हर फैशन में लोगों को कुछ ना कुछ नए परिवर्तन दिखाई देते हैं ऐसे परिवर्तनों में उत्थान पतन और प्रगति की चर्चा फिजूल है।।

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं

1. उद्विकास
2. विकास
3. प्रगति
4. सुधार
5. क्रांति
6. सामाजिक आंदोलन

सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन में संबंध

सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन का एक अंग माना जाता है।वास्तव में समाज के समवन इतने जटिल है कि उनको संस्कृति के तत्व हैं रीति-रिवाजों से अलग नहीं किया जा सकता है।किसी भी प्रकार का परिवर्तन जो संबंधों में आएगा वह रीति रिवाजों के प्रचलित प्रतिमाओं में परिवर्तन से ही आएगा।जब तक रीति-रिवाजों तथा प्रथाओं में परिवर्तन न हो, सामाजिक व्यवहार व संबंधों में परिवर्तन होने की संभावना कम ही रहती है। रीति रिवाज और बताएं हमारी संस्कृति के तत्व है अतएव सांस्कृतिक परिवर्तन तथा सामाजिक परिवर्तन में संबंधों की घनिष्ठता है।

डेविस का कथन है कि सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य केवल उन परिवर्तनों से है जो सामाजिक संगठन में अर्थात समाज के ढांचे और कार्यों मैं होते हैं साथ ही साथ **जॉनसन का भी कहना है** की सामाजिक परिवर्तन है कैसा शब्द है जो कि सामाजिक प्रक्रियाओ, सामाजिकप् प्रतिमानों, सामाजिक अंतर क्रियाओं अथवा सामाजिक संगठन के किसी भी पहलू में होने वाले अंतर या हेरफेर के लिए किया जाता है।इस नाते सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है तथा वास्तव में सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन का ही एक अंग है।

सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तन में अंतर

क्षेत्र में अंतर- सामाजिक परिवर्तन केवल सामाजिक संबंधों में परिवर्तन तक सीमित है किंतु सांस्कृतिक परिवर्तन में कला,विज्ञान है साहित्य के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन भी सम्मिलित होते हैं।

विषय वस्तु में अंतर- सामाजिक परिवर्तन समाज के संबंधों में होने वाले परिवर्तन का नाम है जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन संस्कृति के तत्त्वों, रीति-रिवाजों, प्रथाओं आदि में होने वाले परिवर्तन का नाम है।

व्यापकता में अंतर- संस्कृति शब्द समाज से अधिक व्यापक है किसी भी परिवर्तन को हम सांस्कृतिक परिवर्तन कह सकते हैं यदि उस परिवर्तन के द्वारा जीवन के कुछ तरीके या ढ़ंग बदल जाए जो व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं इसके विपरीत सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य केवल उन परिवर्तनों से है ज्योति समाज के ढांचे व कार्यों में होते हैं।

गति में अंतर- सामाजिक संबंधों में परिवर्तन आसानी से और शीघ्रता से हो सकता है किंतु संस्कृति का संबंध कला विज्ञान विश्वास कानून रीति-रिवाजों से है जिनमें परिवर्तन धीमी गति से होता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन दोनों भिन्न प्रकार के परिवर्तन है फिर भी सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन को प्रभावित करता है जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करता है।

Thank you